लेखक-परिचय

नाम : अलख देव प्रसाद 'अचल'

जनम-अस्थान : बौर, जाखिम, रफीगंज, औरंगाबाद

जनम : 20-12-1959

सिच्छा : एम. ए. (हिन्दी)

पेसा : व्याख्याता, एम. आर. डी. डी. कॉलेज, देवकुंड, औरंगाबाद

निवास : पचरुखिया, सिहाड़ी, औरंगाबाद

परकासित पुस्तक :

1. बदलाव-मगही नाटक, 2. कथा-कली-सम्पादित कहानी संकलन 3. कविता-कली - संपादित कविता संकलन । एकरा अलावे कइएक नाटक, एकांकी आउ कहानी भी लिखलन हे। इनकर व्यंग्य कथा आउ ललित लेख मगही के विभिन्न पत्र-पतरिका में छपल हे। संपादन - मगधांचल (मगही पतरिका)

पाठ-परिचय :

कहानी भक्त भेलन भगवान में राजनीति करेवला नेता लोग के खोखलापन, प्रपंचवादी आउ ठगवाला रूप के बरनन कैल गेल हे। पहिले तो नेता लोग आम जनता के भगवान बना के उनका सामने भक्त के रूप में हाथ जोड़ले खड़ा रहऽ हथ। फिन जब चुनाव जीत के विधायक, सांसद इया मंत्री बन जा हथ, तब गिरगिट नियर रंग बदल ले हथ आउ अप्पन कुरसी पर भगवान नियर स्थापित हो जा हथ। जनता चाहे भक्त बन के केतनो देरी तक हाथ जोड़ले खड़ा रहे, उनका पर कोई असर न पड़े।

भक्त भेलन भगवान

बाढ़! ददा रे!! ई चइत बइसाख के महिन्ना में बाढ़ ? न माने के बात न हे। तबहिंयो सोचली, बिचारली। कुछ ओही रकम। ''चुनावी बाढ़'' साथे आँधी

झकोरा तूफान-सब सरमेरे। नदिया में कइसे बढ़वा आ जा हइ ! जहाँ डुबकी लगावे ओला के भी थाह न चलऽ हइ। ई चुनाव में भी तो केतना लोग के झोली भर देल जा हे। केतना के खाली करवा देवल जा हे। नदिया के हाल सब कोई समान रूप से समझ-बूझ सकऽ ही। एकर हाल गुप्ते रहऽ हे। बस, फरक एतने के। फाजुल में काहेला जयबऽ! कहे में भी हिरदा में पीड़ा उठे लगऽ हे। फिन सबकुछ भुला के एकरे में डुब जा हिअइ। गाँव के गल्ली-गुच्ची से लेके सहर के सड़क तकला । सगरो पोस्टर से रँगायल । देवाल गेउरिया मट्टी आउ खरी से चोतरायल। तब्भे के देख रहलन हे सब्भे कोई होल बिहान। कनहूँ से सीढ़ी छाप पर मोहर लगइहऽ हो भइया, सिढ़िया मत तू भुलइहऽ.....

'तो कनहूँ से कुदारी छाप के मत भुलइहऽ किसनवाँ, परनवाँ तोहर एही रहतबऽ।'—से सगरो अनरस होयल हल।

पाँच बरिस पर फिन एक से एक नया नेता लोग उतरलन हे मयदान में । कउनो ठीकेदार, कउनो डॉक्टर, कउनो इँजीनियर, कउनो पोरफेसर। गाँव-गाँव, गल्ली-गल्ली बेचारे सपना में भी न सोचलन होयत — सुदूर छेत्तर में पहुँच के जहाँ अदमी का, चिरई-चिरगुन्नी, जनावर, सब्भे कोई हाथ न उठौलक होयत; ओकरा आगे नेता जी — पाँव लागी बाबा! हे , हे जरी कृपा करबऽ। असीरबाद के बास्ते अपनन्हीये के दर्सन करे चल अइली हे। ई देह सिर से पाँव तक अपनन्हीं के सेवा में समर्पित रहत।

असीरबाद देउँ कि अपनन्हीं के सेवा करे के बरबखत मौका मिलइत रहे। सचमुच बिना लुकाव-छिपाव के कहेला रहे तो हम कह सकऽ ही कि लगलक कि कोई बैस्नवी भक्त भगवान के सामने दीनता के भाव भरले खड़ा हे। केजगुन फरक हे? केजगुन दरार हे? कहीं कुछ पता न चलइत हल। जइसे कउनो भक्त भगवान से कहऽ हे–हे परभु! अगर हम्मर फलना मनोकामना पूरा हो जायत तो हम फलना चीज चढ़ायम। तोहर मंदिल बनवायब। आगे बरामदा खड़ा करवायब। धरमसाला बनवायब। ओइसहीं तो नेता जी के मुख से निकल रहल हल – अगर हम ई चुनाव में जीत गेली तो अपनन्हीं के सारा समस्या कोसो दूर भाग जायत। चाहे पटावे के पानी के समस्या होय, इया पीये के पानी के.....।

एतना के बाद भी सवाल पर सवाल मन में तरंग नियर उठ रहल हल। अयँ भाई, वास्तव में हमनी के समस्या के दूर करे ओला के हे? जब से देस आजाद भेल, हमनी समझली भी न कि अजादी माने का भेल।न कभी कोटा से चीनी पइली न तेल। न हमनी इहाँ नहर आ गेल न बिजुली। जइसन अन्हार तब, ओइसन अन्हार अब। भोटो समझऽ दे लेइत ही बेचारा सुराजे के चलते। न तो बड़ी दिन तक तो जानली न कि भोट होवऽ हे का? आउ कुछ? हाँ तका नऽ? अयँ भाई! सोचऽ। ई नेता जी कातो इन्जीयिर हलन। तो का जनता के सेवा उहाँ अप्पन पद पर से न कर सकतन हल। ई डॉक्टर साहेब बेचारा गरीब मरीजवन के छोड़ के बेकार सेवा करे चललन हे। आउ ई पोरफेसर साहेब लइकन के जिनगी बरबाद करके हमनी के जिनगी बनावे चललन हे। आउ फिन ई लुटेरा ठीकेदार जिनका नाला नदी के पुल लूटल हो गेल, सड़क आउ सील लूटल हो गेल, तऽ हमनी के सेवा करे चललन हे।

खैर, हमनी में न ऊ दम हे जे कि ओकर मुँह पर पूछ सकीं न जवाब दे सकीं। जहिना से चुनाव होइत रहल। चुनाव के एही रूप रेखा, एही चहल-पहल, एही भूल-भुलइया। पर गेल नजर से पर गेल। फिन तो ऊ नेता जी के दर्सन करे खातिर पोस्टर निकलबे करत— आ रहलन हे औरंगाबाद, पटना में। गोर घिसिआवइत पहुँचऽ तइयो बेस, न पहुँचबऽ तइयो बेस। उहाँ तो कुतबो मुँह पर मूत के भाग जतवऽ न ओकरा दुरदुरा सकऽ। न तो लौट के घर भी न आ सकबऽ।

अरे भाई भविस में का होयत, का जायत से तो बात दूर हे अभी फिन का फिजा बने के चाही, ओकरा पर तो सोचे के बात हे। जानइत ही कोई कुछ न करत। का जनी कबो कृपा हो जाय हमनी पर। भोट मजबूरन देना हे।

चलऽ, भोला बाबू जउन पार्टी में हथ उनकर जोड़ हे जमल समुच्चे देस में। केउ उनकर पार्टी के जड़ उखाड़े वाला माय के लाल पार्टी पैदा न लेलक हे। अबकी भर फिन उनके जीता के देखल जाय। बड़ी दिनन से जीत रहलथुन हे। अबकी चाँस हवऽ मिनिस्टर बने के। बेचारे के ओन्ने तो विधायक रहे के मउका मिललइन। फिन दूसर बात। सबके साथे तो ओही बात हे। दऽ साथ इनके। तय भेल।

भोला बाबू के जब जिला में परदर्सन होये ला हल तो मत कहऽ, सताइसो मोटर गाड़ी फ्री। टरेक्टर के तो कोई पूछे न हल। उहाँ लउआ डाँगर सब्भे पहुँचलन। जिला जाम। तनिको चलेके साँस न। खाय-पियेला सब भोला बाबूए दन्ने से लाइन में लगली तो मत कहऽ। सहर के ई दन्ने से ऊ दन्ने तक लगबहियें भीड़। भोला बाबू के आगे-पीछे के सब्भे गाड़ी ठकचल हल। रंग गुलाल के धूरी उड़ गेल। विरोधी पार्टी के समर्थक जहाँ हलन तहँइ से मुर्गा नियन मूड़ी उठा के देख रहलन हल।

पूरा गाँव अन्धवा धमार नियन। चलऽ, नचनिया में नामे लिखइली तऽ खुल के भोला बाबू के सपोट करूँ। गलबात होये लगल। कल इस्कूल पर भोट होतवऽ। फार के चलम सब्भे कोई।

मतदान सुरू भेल। धीरे-धीरे लाइन में भीड़ होवे लगल। कुछ लोग अँगुरी में निसान लगावे में, कुछ लोग भोटर-लिस्ट फारे में मस्त हलन। एक-एक करके एगो कोठरी में ढुकइत-निकलइत जाइत हलन। दुआरी पर एगो अदमी खाड़ होके हाँक रहल हल। बस, घण्टो न बीतल कि धड़ाम-धड़ाम। भाग रेऽऽ! आ गेलउ बूथ लूटेवाला। नऽ, मुकाबला करम। देखम ओकर पट्ठा के ताकत। गोली बम के अवाज भेल। भगदड़ मचल, पट गेलन बूथ पर दस-पंदरह अदमी। गोली के होली होवे लगल। देखइत भर में दू-चार अदमी धड़ाम-धड़ाम मुँहे के भरे भुइयाँ पर गिरलन सुनसान हो गेल बूथ। बस, बच गेलन ओही जे बूथ कब्जा करे में जीत गेलन हल।

ओही नौ बजे के भाग दौड़। जब धेयान जाहे तो समूचे देह काँपे लगऽ हे। रतन आउ मोसाफिर के भी जान चल गेल। बड़ी वीरता के काम कयलन हल दुन्नो जवान भोला बाबू ला ...बेचारा!

कुछ दिन बीतल। आउ सब्भे के तो गोली मारऽ, रतन आउ मोसाफिर के अउरत के कोई परवरिस देवेवला न। बलौक आउ जिला में केतने दरखास उचरंग चाट गेल, कुछ सुनवाई न। बेचारी उनकर मेहरारू फिफिहिया होयल हलन अप्पन बाल-बच्चन के साथ। तबाही मच गेल। रातहीं दुन्नो के मिलल साढ़े सात बजे के समाचार में भोला बाबू आ गेलन मिनिस्ट्री में, सिंचाइ मंत्री के भार सौंपल गेल।मन हुलसल। आत्मा जुड़ायल। अब जरूर हमनी के गाँव के भाग पलटत। जरूर रतन

4. भोट के बाद नेताजी से मिले ला। का-का करे पड़ऽ हे?

5. मंत्री बनला पर तीन बरिस में भोला बाबू कय बार 'सुकरन बिगहा' अयलन?

लिखित :

1. बाढ़ आवे से नदी में कउन-कउन बदलाव हो जा हे?
2. बैस्नवी भक्त केकरा कहल जाहे?
3. भक्त आउ भगवान के माने आउ दुन्नो के सम्बन्ध विस्तार से बतावल जाय।
4. इंजीनियर, डॉक्टर आउ पोरफेसर अप्पन पद पर रहके जनता के सेवा कइसे करतन? अलगे-अलगे समझा के लिखऽ!
5. राजनीतिकदल आउ उनकर नेता के परचार लागी होयल परदरसन में कउन-कउन जोगाड़ करल जाहे?
6. भोला बाबू कउन विभाग के मंत्री बनलन ?
7. भोलाबाबू के मंत्री बनला पर लोग कउन-कउन बात के आसा लगावे लगलन ?
8. सुकरन बिगहा के लोग मंत्री जी से मिलेला का कयलन?
9. मंत्री जी 'सुकरन बिगहा' के लोग से मिलके का कहलन?

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से तीन गो समास चुन के ओकर नाम लिखऽ।
2. पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनऽ आउ ओकरा से वाक्य बनावऽ।
3. पाठ से बिदेसी सबद कउन-कउन आयल हे, लिखऽ।
4. नीचे लिखल सबद से वाक्य बनावऽ :

   फिफिहिया, परबरिस, गलबात, भगदड़, सदाबरत।

योग्यता-विस्तार :

1. चुनाव के गुन-दोस पर एगो बातचीत रखऽ।
2. 'चुनाव' पर एगो निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ

पिफिहिया	:	बेचैन
तबाही	:	बरबादी
हुलसल	:	खुस भेल
भिजुन	:	नजदीक

आउ मोसाफिर पर भोला बाबू के धेयान जायत। जरूर अबकी बेर नहर में पानी गिर जायत। गली में नेहाय-फिंचे-पीये ला चापाकल लग जायत। फिन कुछ दिन गुजरल। तीन बरिस में दसो मरतबा भोला बाबू अयलन भी, तो औरंगाबाद तक। सोंचल गेल कि एक दिन भोला बाबू के सामने धरना देवे के जरूरत हे। तब साइत सुनथ।

एक दिन भोला बाबू भिजुन धरना देवे ला दस-पनरह अदमी पहुँचलन पूछइत-पूछइत। उहाँ कोइ आवे तऽ बस एतने कि तोहनी कहाँ से आयल हें? —— 'सुकरन बिगहा से'। बस, फिन कोई कुछ न। पूरे दिन भर – साहेब न हथ। आधी रात के बाद लाल-लाल बत्ती ओला कार आके लगल। भोला बाबू दू-तीन अदमी के साथ गाड़ी से उतरलन आउ सड़ाक से फ्लैट में घुँस गेलन।

बिहान भेल। अब अयतन साहेब हमनी के दुखड़ा सुने, तब अयतन। कहीं कुछ न। चपरासियो से कुछो पुछला पर बिगड़ के ललटेन हो जा हल। न रहल गेल। भूखे-पियासे कखनी तक रहब? अइसहूँ मरना हे, ओइसहूँ मरना हे। कइली सब्भे हो हल्ला—साहेब! हमनी के भी तो जरा सुनूँ ? कनहूँ कुछ न। बड़ी देरी के बाद फह-फह लेस में टोपी लगइले साहेब अयलन, मन गदगदायल। सोचली अब जरूर .....। बाकि ऊ कार दन्ने मुड़लन, आउ कार में बइठ गेलन। हमनी कार दन्ने लपकली आगे पीछे हाथ जोड़ले घेर लेली। नेता जी रुख बदलइत बोललन–"कहाँ से आया है तुमलोग?" "जी सुकरन बिगहा से।" बेमतलब का भीड़ लगाये हुए हैं, का इहाँ सदाबरत बँटता है? "जी हुजूर, भुला गेली अपने? अपनहीं के चलते रतन आउ मोसाफिर...." कह न पइली कि नेता जी कहलन– 'हटो सामने से। आना बाद में। बढ़ाओ गाड़ी।" ई सुनके सब्भे के आँख तर धुंध लउक गेल कि—'भक्त भेलन भगवान'!

अभ्यास–प्रस्न

मौखिक

1. नेता लोग के भासन के नमूना देखावऽ!
2. चुनावी बाढ़ के मतलब समझावऽ!
3. चुनाव में परचार ला कउन-कउन उपाय करल जाहे?

सदाबरत	:	सब्भेला
दुरदुराना	:	दूर भगाना
आरथिक	:	पइसा कउड़ी संबंधी
केजगुन	:	कहाँ
धरमसाला	:	धरम के काम ला मकान
अनरस	:	अनसाल
बरबखत	:	हमेसा
दीनता	:	गरीबी

●